मधुमक्खी परिवारों में वकछूट एवं घरछूट की समस्या तथा नियंत्रण

आमतौर पर पेटिकाओं में पाली जाने वाली मधुमक्खी प्रजातियॉ शाँत स्वभाव की होती है तथा जल्दी से वंशों को छोड कर नहीं जाती है लेकिन कुछ अवस्थाओं में जैसे कि वकछूट व घरछूट में मधुमक्खियां अपने वंशों को छोडकर नए स्थान पर वंश की स्थापना कर लेती हैं। इससे मधुमक्खी पालक को दोहरा नुकसान होता है, आधी मधुमक्खियों के उड जाने से सीधे नुकसान के साथ-साथ मधुमक्खी वंशों के कमजोर हो जाने से शहद की पैदावार में भी कमी आ जाती है। इन दोनों प्रवृतियों के बारे में विस्तार से जानकारी तथा इनका प्रबंध नीचे दिया गया है:-

वकछूटः-

बसंत ऋतु में अनुकूल वातावरण व मौनचरों की बहुतायत होने के कारण मधुमक्खियाँ पूरे जोर शोर से मकरंद व पराग का भण्डारण आंरभ कर देती है । पुराने छतों की मरम्मत एवं नए छतों का निर्माण करती है तथा रानी मधुमक्खी तेजी से अंडे देती है जिसके फलस्वरूप मधुमक्खियों कि संख्या तीव्र गति से बढती है। इससे और ज्यादा शहद भंडारण व अंडे देने के लिए स्थान की कमी हो जाती है। ऐसी स्थिति में पुरानी रानी स्थान के अभाव के कारण लगभग आधी कामकाजी मधुमक्खियों को लेकर पुराने वंश को छोडकर नए स्थान पर चली जाती हैं इसे वकछूट या गणछूट कहते हैं। अपने पुराने मॉ वंश को छोडकर नए घर की खोज में निकले मौन समूहों का वकछूट कहते हैं।

1. वकछूट के लक्षणः-

- मौनवंशों में वकछूट साफ मौसम में प्रायः सुबह 10 बजे से शाम 2 बजे के भीतर होता है। परन्तु यदि मौसम अनुकूल न हो तो शाम देरी को भी वकछूट हो सकता है।
- बाहर काम करने वाली कामकाजी मधुमक्खियों की अपेक्षा घरेलू या सेविका मक्खियों की संख्या ज्यादा होना व मधुमक्खियों का मौनवंशों के बाहर झूंड बनाकर बैठना।
- रानी मक्खी के लिए अण्डे देने के लिए खाली कोष्ठों की कमी होना।
- सभी छतों का शिशुओं, मधु और पराग से भरा होना जिसके फलस्वरूप मकरंद व पराग के भण्डारण के लिए खाली कोष्ठों का अभाव होना ।
- मौनगृह में अधिक भीड़ व नर मधुमक्खियों के कोष्ठों का निर्माण होना।
- रानी मधुमक्खी के कई कोष्ठों का फ्रेम के नीचे की तरफ निर्माण होना।

2. वकछूट की क्रियाः-

- मौनवंश छोड़ने से पहले मधुमक्खियां शहद से अपना पेट भर लेती हैं और मौनवंश को छोडकर बाहर आ जाती है।
- इसके पश्चात् पुरानी रानीमक्खी लगभग आधी कामकाजी मधुमक्खियों के साथ अपने पुराने वंश को छोड़कर अस्थायी रूप से नजदीक ही किसी पेड़ या झाड़ी पर गुच्छा बना कर बैठ जाती है। इस वकछूट को मुख्य/ प्रधान वकछूट कहा जाता है। इसके पश्चात् कई बार सील्ड रानी कोष्ठों में से निकली प्रथम नई रानी भी वकछूट करती है, इसे दुरयम वकछूट कहते हैं।
- मधुमक्खियों में कमेरी मधुमक्खियां की संख्या के अनुसार ही 2, 3, या 4 वकछूटों की संख्या निर्भर करती है। अंत में बची हुए रानी कोष्ठों में से जो भी नई रानी पहले निकलती है वह अन्य रानी कोष्ठों को नष्ट कर देती है तथा एक नए स्वतंत्र मधुमक्खी वंश की स्थापना हो जाती है। उसके पश्चात् झूंड में से खोज करने वाली मधुमक्खियां नये उपयुक्त स्थान का चयन करती हैं व 2-48 घंटे के अन्दर चुने हुए स्थान पर नये मौनवंश की स्थापना हो जाती है।

3. वकछूट का नियंत्रणः-

मधुमक्खीयों में वकछूट मौनवंशों के विभाजन की एक प्राकृतिक क्रिया जिसे पूरी तरह रोका नहीं जा सकता है। लेकिन वकछूट का निकलना मधुमक्खीपालक के लिए नुकसानदायक होता है क्योंकि वकछूट के कारण

मौनवंश कमजोर हो जाते हैं और वे मधुप्रवाह में अधिक शहद इकट्ठा नहीं कर पाते। इसके अलावा वकछूट के समय मधुमक्खियां अपनी पूरी शक्ति शहद इकट्ठा करने की बजाय नए रानी कोष्ठ बनाने व नये घर के स्थान के चयन में लगा देती हैं। इसलिए इस पर नियंत्रण करने के लिए निम्नलिखित उपायों को अपनाया जा सकता हैः-

- मधुमक्खी वंशों में भीड और स्थानाभाव को रोकने के लिए बने हुए खाली छत्ते या छत्ताधार लगे फ्रेम, वंश के बीच में देने चाहिए तकि वे मधुमक्खियों द्वारा जल्दी से अपना लिया जाए। यदि वंश में पहले से ही 10 फ्रेम हैं तो नया मधु-कक्ष ;सुपरद्ध लगाना चाहिए। मा-वँश से 2-3 बन्द हुए शिशु छत्ते को निकालकर उपर रखे सुपर में लगा देना चाहिए और छत्ताधार लगे खाली छत्ते नीचे के कक्ष में स्थानांतरित कर देने चाहिए इससे मधुमक्खियाँ सुपर कक्ष को शीघ्रता से स्वीकार कर काम शुरू कर देती है ।
- अगर वातारवण अनुकूल हो और मौनचर प्रर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है तो वंश को विभाजित कर वकछूट की प्रवृति को शांत करने के साथ- साथ वशों की संख्या भी बढाई जा सकती है। लेकिन अगर मधुमक्खी पालक का उद्धेश्य वंश बढाना नहीं है तो मधुस्त्राव से पहले विभाजित वशों को फिर से मिला देना चाहिए ।
- वकछूट के समय नए बने रानी कोष्ठों को खत्म करते रहो।
- मौनवंशों को प्रति वर्ष पुरानी रानी को बदल कर नए रानी देने से भी वकछूट की प्रवृति खत्म हो जाती है ।
- मौन गृह के द्वार पर रानी रोधक जाली लगाओ ।
- अगर वशं सुपर पर है तो 15 दिन में शिशु कक्ष को उपर और उपरी कक्ष सुपर को नीचे करते रहना चाहिए क्योकि रानी मक्खी अपने आप को सिर्फ नीचे वाले कक्ष तक सीमित रखती है जिससे उसमें कामकाजी मक्खियों की संख्या अधिक हो जाती है लेकिन उपरी कक्ष को नीचे लगाने से ज्यादा खाली जगह मिल जाती है और रानी उसमें काम करना शुरू कर देती है।

4. वकछूट को पकड़ना:-

अगर सावधानी रखनें के बावजूद वकछूट हो जाए तो उसे पकड कर या तो नया वंश बना लेना चाहिए अथवा माँ वशं के साथ दोबारा मिला देना चाहिए। वकछूट किसी उचित स्थान पर स्थापित होने से पहले हवा में 10-15 फीट की उँचाई तक उडता है । ऐसे में उनके उपर पानी छिडककर उन्हें किसी नीचे जगह पर स्थापित होने के लिए मजबूर किया जा सकता है क्योकि पानी छिडकने से मधुमक्खियों के पख्ंा गिले हो जाते हैं तथा ऐसे वशं को आसानी से पकडा जा सकता है। वकछूट को किसी खाली मौन गृह में एक या दो ब्रूड व शहद के फ्रेम देकर अथवा किसी टोकरी/थैले में डालकर या ब्रूश से झाडकर पकडा जा सकता है । वकछूट को थैले या टोकरी में पकड़ने के पश्चात इसे मौनालय में ले जाकर उचित स्थान पर लटका दें तथा बाद में कुछ पराग, शहद व शिशुओं वाले छत्ते दे कर नए मौनगृह में डाल दें। 2-3 दिन तक नए मौनगृह के प्रवेश द्वार पर क्वीन गेट लगाकर रानी मधुमक्खी को मौनगृह से बाहर जाने से रोका जा सकता है। इस प्रकार स्थापित मौनवंश को कुछ दिनों तक चीनी का घोल देते रहें।

ख. घरछूट:

कई बार आंतरिक अथवा बाहरी विकट परिस्थितियों से छुटकारा पाने के लिए समस्त मधुमक्खी वंश अपने छत्ते को छोडकर रानी मक्खी के साथ किसी और अनुकूल स्थान पर जाकर वंश की स्थापना कर लेते हैं, इसे घरछूट कहते हैं। वकछूट की अपेक्षा इस स्थिति में रानी के साथ सारी की सारी मौने छत्ते को छोड देती है । घरछूट के मुख्य कारण है शत्रु जैसे कि मोमी पतंगा, तैतया, चीटिया, आदि का प्रकोप, रोगों जैसे कि विषाणु शिशु रोग, फाउल ब्रूड आदि का संक्रमण, भोजन का अभाव, उपयुक्त स्थान का अभाव, असहनीय मौसम , बार-बार निरीक्षण करके छेडछाड, अधिक धँआ आदि हैं। घरछूट की प्रवृति इटालियन मधुमक्खी की अपेक्षा भारतीय मधुमक्खियों में ज्यादा पाई जाती है। भारतीय मधुमक्खी तो अकारण भी मौनग्रह का त्याग कर देती है ।

1. घरछूट के संकेत:-

- घरछूट एकदम या अचानक ही नहीं होता है। मौनें घरछूट से कई दिन पहले से ही इसकी तैयारी शुरू कर देती हैं। रानी अण्डे देना बंद कर देती है और बूरड में से व्यस्क मक्खियों को निकलने देती है।
- मधुमक्खियां पराग व मकरंद एकत्रित करना बंद कर देती हैं और छत्तों में जो भी भोजन है उसे खाने में लग जाती हैं। यदि मौनवंश में बीमारी है तो शिशुओं को छोड़कर भी मधुमक्खियां भाग जाती हैं, अन्यथा शिशु छोड़कर नहीं जातीं।
- कुछ मौनें उचित स्थान खोजने लग जाती हैं। घरछूट में गंतव्य स्थान पहले से ही ढूंढा होने के कारण समस्त मौनें रानी के साथ दिन के समय शांत मौसम में पुराना छत्ता छोड़ कर नए खोजे स्थान पर जाकर घर बनाना शुरू कर देती हैं। जहाँ पर उनको पर्याप्त भोजन, अनुकूल मौसम मिलता है और कुछ समय के लिए दुश्मन व बीमारियों से भी छुटकारा मिल जाता है।
- घरछूट के पश्चात् मौनगृह प्रायः मधुमक्खी, शिशु व खाद्य रहित हो जाता है।
- घरछूट में पूरा मौनवंश ही स्थानान्तरित हो जाता है तथा यह मधुमक्खीपालक के लिए हानिकारक है। घरछूट अकुशल प्रबंधन का परिणाम होता है। घरछूट की रोकथाम के लिए मधुमक्खी पालक को मौसम के अनुरूप मधुमक्खियों के जीवन चक्र, मौनचरों की उपलब्धता तथा मौसमी परिवर्तनों की सम्पूर्ण जानकारी लेकर मधुमक्खियों के घरछूट करने के वर्ष के समय का पता लगाना चाहिए ताकि कुशल प्रबंध द्वारा घरछूट की प्रवृति को समय रहते रोका जा सकता है ।

2. घरछूट का नियंत्रण:-

- कमजारे वंशों को मिलाकर शक्तिशाली वशं् बना देना चाहिए ताकि विपरित परिस्थितियों का सामना कर सकता है ।
- मौनवंशों को बहुत कमजोर न होने दें व उनमें शिशुरहित स्थिति न आने दें।
- मौनवंशों में उपयुक्त भोजन के भंडार रखें। भोजन अभाव की स्थिति में चीनी का घोल और परागपूरक भोजन देकर जरूरत पूरी करनी चाहिए।
- मौनवंशों को दुश्मन व बीमारियों के प्रकोप से बचाना चाहिए।
- अगर मौसम अनुकूल ना हो तो मौनवंशों को स्थानांतरित ना करें।
- अनावश्यक रूप से मधुमक्खियों से छेड़खानी नहीं करनी चाहिए।
- अधिक गर्मी और सर्दी के मौसम में ताप नियंत्रण के उचित उपाय करने चाहिए।
- यदि मधुमक्खियों के गृहों के पास कीटनाशक का छिड़काव किया जाना हो तो ऐसी स्थिति में कृत्रिम भोजन देना चाहिए व मौन पेटिका का मुँह बंद कर देना चाहिए ।